Sabir Piya Kalyari Ki Hikayat (Hindi)

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

साबिर पिया कल्यरी की हिकायात

तहज्जुद के वक़्त विलादत 02

बा इमामा रहना अक़्लमन्दी की अ़लामत है 08

नज़रे साबिर का इन्तिख़ाब 11

सफ़हात 16

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**साबिर पिया कल्यरी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **की हिकायात**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

साबिर पिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कल्यरी की हिकायात

दुआए अ़त्तार

या रब्बे करीम ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला **"साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की हिकायात"** पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम का बा अदब बना और उस की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مُسلم، ص۲۱۶ حدیث۴۰۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमां बरदार मुरीद

सिल्सिलए आ़लिया चिश्तिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भांजे और मुरीद इ़ल्मे दीन सीखने के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सब से पहले फ़र्ज़ और नफ़्ल नमाज़ों पर इस्तिक़ामत इख़्तियार करने की नसीह़त फ़रमाई और उन्हें लंगर ख़ाने की ज़िम्मेदारी अ़ता फ़रमा दी। चूंकि पीरो मुर्शिद ने लंगर की तक़्सीम का हुक्म फ़रमाया था उस में से खाने का वाज़ेह़ तौ़र पर नहीं फ़रमाया था लिहाज़ा येह सआ़दत मन्द मुरीद हुक्मे मुर्शिद पर अ़मल करते हुए लंगर ख़ाने से खाना तक़्सीम फ़रमाता लेकिन ख़ुद एक लुक़्मा भी न खाता। पूरा दिन रोज़े से रहता और जंगली दरख़्त

के पत्तों, फलों और फूलों से इफ़्तार कर लिया करता। एक अ़र्से तक येह सिल्सिला जारी रहा लेकिन इस मुजाहदे की वज्ह से जिस्म निहायत कमज़ोर हो गया। जब ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने सआ़दत मन्द भान्जे और कामिल मुरीद की येह कैफ़िय्यत देखी तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : आप खाना तक़्सीम कर के ख़ुद भी कुछ खाते हैं या नहीं ? सआ़दत मन्द मुरीद ने निगाहें झुका कर निहायत अदब से बारगाहे मुर्शिद में अ़र्ज़ किया : आ़लीजाह ! आप ने खिलाने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया था, मुझ में इतनी जुर्अत कहां कि मुर्शिद की इजाज़त के बिग़ैर एक दाना भी खा सकूं ? येह जवाब सुन कर ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सआ़दत मन्द भान्जे और कामिल मुरीद के सब्र से बहुत ख़ुश हुए और सीने से लगा कर "**साबिर**" का लक़ब अ़ता फ़रमाया।

(फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 2)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह से साबिर का लक़ब पाने वाले कामिल मुरीद "बानिये सिल्सिलए चिश्तिय्या साबिरिय्या ह़ज़रते सय्यिद अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हैं।"

तहज्जुद के वक़्त विलादत

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादत (Birth) 19 रबीउ़ल अव्वल 592 सि.हि. मुत़ाबिक़ 19 फ़रवरी 1196 सि.ई. को ब वक़्ते तहज्जुद बरोज़ जुमे'रात हरात (अफ़्ग़ानिस्तान) में हुई। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़सनी सय्यिद हैं और हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की औलाद में से हैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम गरगानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप के कान में अज़ान दी और फ़रमाया : येह बच्चा कुत़्बे आ़लम होगा। (फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 3,5 मुल्तक़त़न)

ख़्वाब में ख़ुश ख़बरी

मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादत (Birth) से क़ब्ल

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ख़्वाब में "**अ़ली**" नाम रखने का हुक्म फ़रमाया फिर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर "**अ़हमद**" नाम रखने का हुक्म फ़रमाया। यूं आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम अ़ली अ़हमद रखा गया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत (Birth) के बा'द एक बुज़ुर्ग आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अब्बूजान से मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए और आप को देख कर फ़रमाया : "येह बच्चा **अ़लाउद्दीन** कहलाएगा।"[1] आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मामूं हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को साबिर का लक़ब अ़ता फ़रमाया[2] येही वज्ह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को "**अ़लाउद्दीन अ़ली अ़हमद साबिर**" के नाम से शोहरत ह़ासिल है।

अल्लाह पाक का नाम सिखाइये

ऐ आ़शिक़ाने औलियाए किराम ! दूध पीते बच्चे के सामने वक़्तन फ़ वक़्तन **अल्लाह, अल्लाह** करते रहना चाहिये कि जब ज़बान खुले तो ज़बान से पहला नाम "**अल्लाह**" ही निकले।

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत मौलाना शाह इमाम अ़हमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (बच्चे को) ज़बान खुलते ही "**अल्लाह, अल्लाह**" फिर पूरा कलिमए त़य्यिबा : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सिखाए। (औलाद के हुक़ूक़ स. 20)

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने बच्चों की ज़बान से सब से पहले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहलवाओ।" (شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد، ۶/۳۹۷، حدیث: ۸۶۴۹)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

1..... हज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अ़हमद साबिर कल्यरी, स. 42 मुलख़्ख़सन
2..... फ़ैज़ाने हज़रत साबिरे पाक, स. 5

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी नवासी के लिये सब घर वालों को फ़रमाया हुवा था कि इन के सामने "**अल्लाह अल्लाह** का ज़िक्र करते रहें ताकि इन की ज़बान से पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" निकले और जब वोह नवासी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में लाई जाती तो आप खुद भी उन के सामने ज़िक्रुल्लाह करते। चुनान्चे जब उन्हों ने बोलना शुरूअ़ किया तो पहला लफ़्ज़ "**अल्लाह**" ही बोला। (तरबियते औलाद, स. 100)

या इलाही दिखा हम को वोह दिन भी तू आबे ज़मज़म से कर के हरम में वुज़ू
बा अदब शौक़ से बैठ के क़िब्ला रू मिल के हम सब कहें यक ज़बां हू ब हू
अल्लाहू' अल्लाहू' अल्लाहू' अल्लाहू'

(बयाज़े पाक, स. 12)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तहज्जुद की पाबन्दी

हज़रते सय्यिदुना अ़लाउद्दीन अ़ली अहमद साबिर कल्यरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने छे साल की उ़म्र से बा क़ाइदा ज़ाहिरी व बातिनी आदाब के साथ नमाज़ अदा करनी शुरूअ़ फ़रमा दी थी और कहा जाता है कि सातवां साल शुरूअ़ होने पर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पाबन्दी के साथ तहज्जुद की नमाज़ पढ़नी शुरूअ़ फ़रमा दी। **अल्लाह** पाक की इ़बादत में हर वक़्त मश्ग़ूल रहते। बल्कि नमाज़े तहज्जुद के बा'द अक्सर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कमरे से ज़िक्रुल्लाह की आवाज़ें सुनाई देती थीं। (फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 8)

छोटी उ़म्र में ही रोज़ा रखने का मा'मूल

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का छोटी उ़म्र से ही रोज़ा रखने का मा'मूल था और मुसल्सल रोज़ा रखने की येह आ़दत आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आख़िरी उ़म्र तक जारी रही।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ..... फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 9

सांप नहीं काटेगा

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के अब्बूजान एक दिन आंखें बन्द किये मुराक़बे में मश्ग़ूल थे कि अचानक मरे हुए सांप का एक टुकड़ा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर और दूसरा टुकड़ा ज़मीन पर आ गिरा। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते साबिर पिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की अम्मीजान को उस मुर्दा सांप की जानिब मुतवज्जेह किया, वोह सांप के दो टुकड़े देख कर ह़ैरान रह गईं और फ़रमाया : क्या मैं ख़्वाब देख रही हूं ? ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अम्मीजान की तश्वीश दूर करते हुए फ़रमाया : मैं ने सांपों के बादशाह को मार दिया है और सांपों से वा'दा लिया है कि वोह मेरे ख़ानदान के किसी फ़र्द को नहीं काटेंगे।[1]

तीन साल में उ़लूमे ज़ाहिरी की तक्मील

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के अब्बूजान का इन्तिक़ाल हो गया तो अम्मीजान ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को अपने भाई ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन मस्ऊ़द गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ह़वाले कर दिया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी ख़ुदादाद सलाह़िय्यत की वज्ह से सिर्फ़ तीन साल के मुख़्तसर अ़र्से में कई ज़ाहिरी उ़लूम ह़ासिल कर लिये, ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) ने तीन साल में अ़रबी व फ़ारसी की कुतुबे फ़िक़्ह़, ह़दीस, तफ़्सीर, मन्तिक़ व मआ़नी वग़ैरहा उ़लूम की तक्मील की। येह सब उ़लूम इतनी जल्दी ह़ासिल कर लिये कि कोई दूसरा बच्चा 15 साल में भी ह़ासिल नहीं कर सकता था।

(ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कल्यरी, स. 48 मुल्तक़त़न)

1..... फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 11

दादा की वफ़ात की पेश्गी ख़बर दे दी

बचपन में एक दिन ह़ज़रते साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की : आज से तीन साल बा'द मेरे दादाजान फ़ौत हो जाएंगे। येह सुन कर बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेटा ! आप के दादा तो बग़दाद शरीफ़ में हैं और आप यहां (फिर आप को कैसे मा'लूम हुवा कि तीन साल बा'द ऐसा होगा) ? अ़र्ज़ की : अभी मैं ने अपने दिल की त़रफ़ देखा तो अब्बूजान की सूरत सामने आ गई और आप ने सीधे हाथ की तीन उंग्लियां मेरी त़रफ़ उठाईं और येह (दादाजान के) इन्तिक़ाल का इशारा है। ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप की फ़िरासत (या'नी समझदारी) देख कर आप को सीने से लगा लिया। (तज़्किरए ह़ज़रते साबिर कल्यर, स. 36 मुलख़्ख़सन)

हर वली का वासित़ा अ़त्तार पर कीजिये रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़िलाफ़त की अ़ज़ीमुश्शान मह़फ़िल

रमज़ानुल मुबारक में बा'द नमाज़े तहज्जुद ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कुछ देर के लिये आराम फ़रमा हुए तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आंख लग गई। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने देखा कि एक ऐसे मक़ामे पुर अन्वार में अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के साथ मौजूद हैं कि हर त़रफ़ नूर ही नूर है। एक आ़लीशान दरबार सजा है **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौजूद हैं। नीज़ सिल्सिलए चिश्तिय्या के तमाम बुज़ुर्ग भी ह़स्बे मरातिब अपनी अपनी जगहों पर मौजूद हैं। ह़ज़रते बाबा फ़रीद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पीरो मुर्शिद ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हुक्म दिया : मख़्दूम अ़ली

अह़मद (साबिर) को **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कीजिये। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हुक्मे मुर्शिद पर अ़मल करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद साबिर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर कर दिया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अह़मद साबिर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की पुश्त पर सीधे कन्धे की जानिब चूमा और फ़रमाया : "هٰذَا وَلِيُّ اللهِ" या'नी येह **अल्लाह** पाक का वली है, इस के बा'द वहां मौजूद तमाम बुज़ुर्गों और फ़िरिश्तों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदा को अदा करते हुए उसी मक़ाम को चूमा और कहा : "هٰذَا وَلِيُّ اللهِ" फिर हर त़रफ़ से मुबारक बाद का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया। इन मुबारक बाद की आवाज़ों से बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आंख खुल गई।

अगले दिन ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक आ़लीशान मह़फ़िल करवाई, जिस में ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली, ह़ज़रते शैख़ ह़मीदुद्दीन नागोरी, ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या मुलतानी, ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम गरगानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم समेत बड़े बड़े उ़लमा व औलियाए किराम शरीक हुए। ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सब के सामने अपना ख़्वाब बयान फ़रमाया जिसे सुनते ही वहां मौजूद तमाम बुज़ुर्गों ने एक एक कर के ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मोहरे विलायत (Stamp) को चूमा और "هٰذَا وَلِيُّ اللهِ" कह कर मुबारक बाद दी। इस के बा'द ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ख़ानदाने चिश्तिय्या की इमामत व ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमा कर **अपने मुबारक हाथ से अपनी बा बरकत टोपी पहनाई और सब्ज़ सब्ज़ इमामे से आप** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **की दस्तार बन्दी फ़रमाई** फिर कल्यर शह्र की विलायत व ख़िलाफ़त की सनद सब ह़ाज़िरीने मह़फ़िल को सुना कर अ़त़ा फ़रमाई। (तज़्किरए ह़ज़रते साबिर कल्यर, स. 47 मुलख़्ख़सन)

नमाज़ से महब्बत

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को नमाज़ से बेहद महब्बत थी और इस महब्बत की वज्ह आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने येह बयान फ़रमाई : नमाज़ भी क्या अच्छी चीज़ है कि हुज़ूरी (की बरकत) से दरबार (या'नी दरबारे इलाही) में ले आई है (या'नी नमाज़ **अल्लाह** पाक की बारगाह में हाज़िरी का सबब बनने की वज्ह से बेहतरीन इबादत है)। (तज़्किरए हज़रते साबिर कल्यर, स. 82 मुलख़्ख़सन) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का लिबास कुरता, तहबन्द और इमामा शरीफ़ था।

(हज़रते मख़्दूम अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कल्यरी, स. 80 मुल्तक़तन)

बा इमामा रहना अक़्लमन्दी की अलामत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! इमामा शरीफ़ सर की ज़ीनत, पाबन्दिये सुन्नत की पहचान, मोमिन की आन बान और उलमा, फ़ुक़हा व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ الله की शान है इसे छोड़ना सबबे ख़ुसरान (या'नी नुक़्सान) है। जन्नती सहाबी हज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : **दिन में सर ढांपना अक़्लमन्दी है।**[1]

हज़रते अल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अक़्लमन्द आदमी से येह बात छुपी हुई नहीं कि नंगे सर रहना अच्छी आदत नहीं, क्यूं कि इस में तर्के अदब और मुरव्वत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पाई जाती है।[2]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! हमें भी चाहिये न सिर्फ़ नमाज़ के वक़्त अपने रब के हुज़ूर सर ढांप कर हाज़िर हों बल्कि हर वक़्त ही इमामा शरीफ़ सजाए रखें कि इस की बड़ी बरकतें हैं **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِعْتَمُّوْا تَزْدَادُوْا حِلْمًا या'नी इमामा बांधो तुम्हारा हिल्म बढ़ेगा।[3]

---

1 ... کنز العمال، کتاب المعیشة والعادات، فرع فی العمائم، جزء: ۱۵، ۸/۱۳۳، حدیث: ۴۱۱۳۶ مختصراً

2 ... تلبیس ابلیس، الباب العاشر فی ذکر تلبیسه علی الصوفیة الخ، فصل فی ذکر الادلة علی کراہیة الغنا الخ ص ۳۱۹

3 ... معجم کبیر، عبداللہ بن العباس، ۱۲/۱۷۱، حدیث: ۱۲۹۴۶

हज़रते अल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (इमामा बांधो) तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा और तुम्हारा सीना कुशादा होगा क्यूं कि ज़ाहिरी वज़्अ़ क़त़्अ़ का अच्छा होना इन्सान को सन्जीदा और बा वक़ार बना देता है नीज़ ग़ुस्से, जज़्बाती पन और ख़सीस ह़रकात से बचाता है। (فیض القدیر، حرف الهمزة، ۱/۷۰۹، تحت الحدیث: ۱۱۴۲)

उन का दीवाना इ़मामा और ज़ुल्फ़ो रीश में वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मा'मूलाते मुबारका

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दिन रात **अल्लाह** पाक की याद में गुज़ारते, लोगों की सोह़बत से बचते, अक्सर ख़ामोश रहा करते, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़ामोशी में भी एक कशिश थी और जब कभी आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه कुछ इर्शाद फ़रमाते तो फ़क़त़ एक जुम्ले में कई सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमा देते। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी करामतों को छुपाते, अगर कोई उस का ज़िक्र करता तो उसे निहायत ख़ूब सूरती से टाल देते, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तारिकुद्दुन्या (या'नी दुन्या से बे रग़बती रखने वाले) बुज़ुर्ग थे लेकिन लोगों की इस्लाह़ को ज़रूर फ़रमाते, इन ख़ूबियों की वज्ह से आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दुन्या की रौनक़ थे।[1]

ग़ौसो ख़्वाजा दाता और अह़मद रज़ा से भी और हर एक वली से प्यार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मह़बूबे इलाही और ह़ज़रत साबिरे पाक

मह़बूबे इलाही ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज़रते साबिर पिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बेह़द एह़तिराम फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास से जब कोई शख़्स ह़ज़रते साबिर पिया رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर होना चाहता तो उसे बहुत ज़ियादा एह़तिराम करने

1..... ह़ज़रते मख़्दूम अ़लाउद्दीन अ़ली अह़मद साबिर कल्यरी, स. 81 माख़ूज़न।

की ताकीद फ़रमाते नीज़ इर्शाद फ़रमाते : कोई बात ख़िलाफ़े मिज़ाज न हो। दोनों बुज़ुर्ग एक दूसरे से बेहद महब्बत फ़रमाते थे।

(सियरुल अक़्ताब मुतर्जम, स. 200)

मुर्शिदे कामिल और मुरीदे कामिल

जब ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़ैज़ ह़ासिल करने के लिये कल्यर शरीफ़ ह़ाज़िर हुए तो उस वक़्त आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक दरख़्त के नीचे तन्हा इबादतो रियाज़त में मश्ग़ूल थे, लिहाज़ा शम्सुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी एक दरख़्त के नीचे बैठ कर तिलावते क़ुरआन करने लगे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के कानों में कलामे इलाही की मिठास रस घोलने लगी तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उस जानिब मुतवज्जेह हुए और जहां से आवाज़ आ रही थी उसी तरफ़ चल पड़े, जब ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने तिलावत ख़त्म कर के सर उठाया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को वहां मौजूद पा कर घबरा गए। लेकिन आप ने निहायत नर्मी से फ़रमाया : "शम्स ! घबराते क्यूं हो ? हम तुम से बहुत ख़ुश हैं।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को अपने मुरीदों में दाख़िल फ़रमा कर अपने मुबारक हाथों से दस्तार बन्दी फ़रमाई। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक लम्बे अ़र्से तक मुर्शिद की ख़िदमत में रहे, वुज़ू कराते और खाने का इन्तिज़ाम भी फ़रमाते यूं आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुर्शिद के ख़िदमत गुज़ार बन गए।

(तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76 माख़ूज़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शम्सुद्दीन मेरा दोस्त है

ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़बान से

निकलने वाली बात **अल्लाह** पाक की बारगाह में बहुत जल्द मक़्बूल हो जाया करती थी इसी लिये आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का लक़ब सैफ़े लिसान भी है । एक मरतबा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को पानी लाने के लिये भेजा जिस में कुछ देर हो गई, जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه वापस आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ले अदा हो गए : एक पियाला पानी लाने में इतनी देर ? शम्सुद्दीन ! क्या दिखाई नहीं देता ? जूंही आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पानी का पियाला ले कर पीने के लिये बैठे तो ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मुंह से दर्द भरी आह निकली फिर फ़ौरन अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! मैं तो नाबीना हो गया ।'' येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सज्दा करते और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : ''**या अल्लाह !** शम्स तो तेरे इस गुनहगार बन्दे का दोस्त और वाह़िद साथी है तू इस के ह़ाल पर रह़्म फ़रमा ।'' जैसे ही दुआ़ ख़त्म हुई ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की नज़र वापस आ चुकी थी ।[1]

नज़रे साबिर का इन्तिख़ाब

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से बेह़द मह़ब्बत फ़रमाते, एक मरतबा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ''ऐ शम्स ! तू मेरा बेटा है, मैं ने ख़ुदा से चाहा है कि मेरा सिल्सिला तुझ से जारी हो और क़ियामत तक रहे ।''[2] आख़िरी उ़म्र में आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने हाथ

1..... फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 38

2..... तज़्किरए औलियाए पाको हिन्द, स. 76

से ख़िलाफ़त नामा लिख कर ह़ज़रते शैख़ शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमा कर पानीपत का साहिबे विलायत मुक़र्रर फ़रमाया। और इस्मे आ'ज़म जो बुज़ुर्गों से सीना ब सीना चला आ रहा था उस की तल्क़ीन फ़रमाई और येह वसिय्यत फ़रमाई : "तीन दिन से ज़ियादा यहां न रहना, **अल्लाह** पाक ने तुम्हें पानीपत की विलायत अ़ता फ़रमाई है, वहां जा कर रहना और भटके हुए लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करते रहना, मैं हर जगह तुम्हारा मुआ़विन रहूंगा।" ह़ज़रते शैख़ शम्सुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बारगाहे मुर्शिद में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मेरा इरादा येह था कि बाक़ी उ़म्र (आप के) आस्तानए आ़लिया की जारूब कशी (या'नी झाड़ू लगाता, ख़िदमत) करता। अब आप का हुक्म है कि पानीपत जाओ। लेकिन वहां शैख़ शरफ़ुद्दीन बू अ़ली क़लन्दर पानीपती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मौजूद हैं मा'लूम नहीं कि वोह मुझ से किस त़रह़ पेश आते हैं ? आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : फ़िक्र मत करो तुम्हारे वहां पहुंचते ही वोह वहां से चले जाएंगे।

(फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 39)

इन्तिक़ाल शरीफ़

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक दिन शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से फ़रमाया : जब आप से कोई करामत ज़ाहिर हो तो समझ लीजियेगा कि मेरा इन्तिक़ाल हो गया है। जिस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से करामत ज़ाहिर हुई फ़ौरन कल्यर शरीफ़ ह़ाज़िर हुए, हुज़ूर साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ 13 रबीउ़ल अव्वल 690 सि.हि. मुत़ाबिक़ 15 मार्च 1291 सि.ई. को हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना शम्सुद्दीन तुर्क رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कफ़न दफ़्न की ख़िदमत अन्जाम दी। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

का मज़ार शरीफ़ कल्यर शरीफ़ ज़िलअ़ सहारनपूर (यूपी) हिन्द में नहरे गंग के कनारे है। (फ़ैज़ाने ह़ज़रत साबिरे पाक, स. 41)

मज़ार की बे हुर्मती की फ़ौरन सज़ा

हुज़ूर साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ के पास से **एक** ग़ैर मुस्लिम गुज़र रहा था, उस ने जब येह देखा कि मज़ार शरीफ़ पर कोई नहीं तो उस की निय्यत ख़राब हुई और उसे मज़ारे मुबारक शहीद कर के अपनी इबादत गाह ता'मीर करने की सूझी लिहाज़ा उस ने अपने इस नापाक इरादे के लिये एक तेशा (एक औज़ार) लिया और कुछ करने लगा, तो उस की तवज्जोह मज़ार शरीफ़ के रोशन दान की त़रफ़ गई तो तजस्सुस से उस ने रोशन दान से झांक कर अन्दर देखना चाहा मगर उस का सर फंस गया और दम घुटने की वज्ह से वोह तड़प तड़प कर मर गया। रात को मज़ार के ख़िदमत गारों के ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना साबिर पिया कल्यरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : **"एक शख़्स गुस्ताख़ी के इरादे से हमारे मज़ार पर आया था उसे सज़ा तो मिल गई है अब वोह मज़ार के रोशन दान से लटका हुवा है उसे आ कर निकाल दिया जाए।"** दूसरी सुब्ह़ वोह ख़िदमत गार अपने साथियों के साथ मज़ार पर ह़ाज़िर हुए, उस शख़्स को खींच कर बाहर निकाला और उस की लाश जंगल में फेंक दी। (तज़्किरए औलियाए बर्रे सग़ीर, 2/5 मुलख़्ख़सन)

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर
दुन्या से चले जाएं हुकूमत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 383)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ से बुग़्ज़ो अ़दावत रखने और उन की गुस्ताख़ी करने में कोई ख़ैर नहीं बल्कि दुन्या व आख़िरत की बरबादी है ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ **अल्लाह** पाक की बारगाह में कई दरजात रखते हैं और अपने मज़ारात पर आने वालों को अपने कमालात के लिह़ाज़ से नफ़्अ़ पहुंचाते हैं । (رَدُّالْمُحتَار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷)

जो हो अल्लाह का वली उस का फ़ैज़ दुन्या में आ़म होता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अच्छे ख़्वाबों की बड़ी अहम्मिय्यत है, चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ में है : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''नुबुव्वत में से मुबश्शिरात के सिवा कुछ बाक़ी नहीं रह गया है।'' तो सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि ''मुबश्शिरात'' क्या हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : अच्छे अच्छे ख़्वाब ख़ुद मुसल्मान उस को अपने लिये देखे या कोई दूसरा उस के लिये देखे ।

(صحیح البخاری، ج۴، ص۴۰۴، الحدیث: ۶۹۹۰)

तुम्हारा फ़ज़्ल है जो मैं ग़ुलामे ग़ौसो ख़्वाजा हूं
न हो कम औलिया की दिल से उल्फ़त या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मकानात के बारे में अहम हिदायात

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (1) जब क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जाओ तो क़िब्ले को न मुंह करो और न पीठ । (بُخاری ج۱ ص۱۵۵ حدیث۳۹۴) (2) जो कोई क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त क़िब्ले को मुंह और पीठ न करे तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है । (مُعجَم اَوسَط ج۱ ص۳۶۲ حدیث ۱۳۲۱)

अगर मकान का नक़्शा बनाते बनवाते वक़्त आर्केटिक्ट और बिल्डर्ज़ वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ज़ैल की चन्द बातों पर अ़मल करें तो बहुत सारा सवाब कमा सकते हैं : ﴾1﴿ वॉशरूम बनाने में W.C. की तरकीब इस त़रह़ हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे और आसानी इस में है कि रुख़ क़िब्ले से 90 डिग्री पर हो या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फेरने में जिस त़रफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये । फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब **दुर्रे मुख़्तार** में है : क़ज़ाए ह़ाजत और पेशाब करते वक़्त क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ करना **ना जाइज़ व गुनाह है** । (دُرِّمُختار ج۱ ص۶۰۸) ﴾2﴿ फ़व्वारा (SHOWER) लगाने में भी येही एह़तियात़ रखी जाए ताकि बरह्ना नहाने वाला क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ करने से बचा रहे । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ब ह़ालते बरह्नगी (या'नी नंगे होने की ह़ालत में) क़िब्ले को मुंह या पीठ करना मक्रूह व ख़िलाफ़े अदब है ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 349) ﴾3﴿ बेडरूम में पलंग की तरकीब इस त़रह़ रखी जाए कि सोने में पाउं क़िब्ले की त़रफ़ न हों, कम अज़ कम 45 डिग्री के बाहर रहें । "फ़तावा शामी" में है : "जान बूझ कर क़िब्ले की त़रफ़ पाउं फैलाना मक्रूहे तन्ज़ीही है ।" (مُلَخَّص از فتاوٰی شامی ج۱ ص۶۰۸،۶۱۰) ﴾4﴿ बिलफ़र्ज़ अगर W.C. या शावर, या चारपाई पलंग वग़ैरा का रुख़ ग़लत़ हो कि बरह्ना होने की ह़ालत में मुंह या पीठ क़िब्ला रू होते हों या सोते हुए पाउं तो इस्तिन्जा करने वाले या नहाने वाले या सोने वाले को बहर सूरत इस का ख़याल रखना होगा कि वोह बरह्ना हो कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ न करे, यूंही पाउं न फैलाए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस
19 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो **अल्लाह** की याद आ जाए और **अल्लाह** पाक के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐब तलाश करते हैं। (مسند امام احمد، ج٦، ص٢٩١، حدیث: ١٨٠٢٠)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net